बाल किलकारी

वर्ष-2, अंक-6
मूल्य 10/-

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

जून - 2016

खुशबू फैल रही कई फलों की,
है कितना सुहाना मौसम आज ।
मस्ती का आया है दिन
खुशियों का फिर हुआ आग़ाज ।

प्यारे दोस्तो,

मन में थोड़ी शरारतें होने लगी हैं । कभी हमारा मन बारिश में भींगने का कर रहा, कभी पेड़-पौधों से बातें करने का; तो कभी खूब मस्ती करने का । लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि आज देश में पानी की किल्लत क्यों है ?नदियाँ, तालाब क्यों सूख रहे हैं ?क्यों हरियाली कमती जा रही है ?क्या जनसंख्या बढ़ने के कारण ऐसा हो रहा है, या फिर कूड़े-कचरों से प्रदूषण के कारण ?क्या नयी-नयी तकनीकों के कारण ऐसा हो रहा है, या फिर हमारी ही लापरवाही के कारण ?हम इन सारी बातों पर जरूर ध्यान देंगे और इन्हें दूर का प्रयास करेंगे । तब तक चलते हैं एक कहानी की ओर–

'' अरे बिट्टू ! कितनी बार कहा है कि नल अच्छा से बंद कर दो । देखो तो पानी बूँद-बूँद गिर रहा है ।'' उसकी दीदी बोली । इस पर बिट्टू बोला, ''क्या दीदी, कितना पानी बर्बाद हो जायेगा । बूँद-बूँद ही तो गिर रहा है ।'' ''बिट्टू ! क्या तुम्हें पता नहीं कि बूँद-बूँद से ही घड़ा भरता है और आजकल देख ही रहे हो, पानी की कितनी किल्लत है । कितने लोग तो इसके लिए लड़ाई कर रहे हैं ।'' उसकी दीदी ने कहा । ''हाँ दीदी, यह बात तो आप ठीक ही कहती हैं, पर इसे बर्बाद होने से कैसे बचाया जा सकता है ?'' बिट्टू ने सवाल किया । ''इसे बचाने के लिए लोगों को जागरूक करना पड़ेगा ।'' उसकी दीदी ने जवाब दिया । तब फिर क्या था लोगों को जागरूक करने के लिए बिट्टू अभी से ही तरकीबें सोचने लगा । लेकिन उसके दिमाग में कोई तरकीब ही न सूझ रही थी। आखिर अकेला बिट्टू कर भी क्या सकता था । अचानक उसे एक बढ़िया तरकीब सूझी । वह पानी -बचाव के ऊपर निबंध लिखने लगा; नारे लिखने लगा और नारे को पेज में लिखकर जहाँ-तहाँ दीवारों पर चिपकाने लगा । साथ-ही-साथ कुछ दोस्तों की एक टोली बनाई, जिनके साथ वह खाली समय में घूम-घूमकर खुले नलों से बहते हुए पानी के लिए काम करने लगा । दोस्तो अंत में एक मजेदार सवाल । मैंने पढ़ा था, तुम पता लगाओ क्या चींटी और छोटे-मोटे, कीड़े-मकोड़े पानी पीते हैं ?और हाँ याद रखना, पानी 'अनमोल मोती' की तरह है । इसलिए इसे सहेज कर रखना जरूर :

किलकारी लाल

प्रेरक प्रसंग

एक बार तेलंगस्वामी को तंग करने के इरादे से एक व्यक्ति ने दूध के बदले चुना घोलकर एक पात्र में रख दिया । स्वामीजी ने पात्र की ओर देखा और घोल को चुपचाप पी लिया । वह व्यक्ति सोचने लगा कि शीघ्र ही अब चूना असर करेगा । मगर यह देख वह हैरान रह गया कि उन पर तो कोई असर हुआ नहीं, बल्कि उसका ही जी घबराने लगा और वह मारे दर्द के तड़पने लगा । वह समझ गया कि स्वामीजी को तंग करने का ही यह दुष्परिणाम है । वह तुरन्त उनके चरणों पर गिर पड़ा और उसने इस कष्ट से उबारने की प्रार्थना की । स्वामीजी ने समीप रखी स्लेट पर खड़िया से लिखा, ''चूने का पानी मैंने पिया और इसका परिणाम तुझे भोगना पड़ा । इसका एकमेव कारण यही है कि हम दोनों के शरीर में एक ही आत्मा का वास है । यदि दूसरे की आत्मा को कष्ट दिया जाए तो वह कष्ट स्वयं की आत्मा को भोगना पड़ता है । इसलिए आगे कभी भी दूसरों को कष्ट देने की चेष्टा न करना ।'' और उन्होंने उस व्यक्ति के सिर पर प्यार से हाथ रखा । उनके स्पर्श मात्र से उसका दर्द जाता रहा । उसने स्वामीजी से काफी माँगी और कहा कि अब वह कभी भी किसी को तंग नहीं करेगा ।

मीठे फल

मीठे-मीठे ताजे फल,
बाजार में आए जब,
मुँह से निकला पानी अब,
दौड़े हम सब फर-फर कर।
मीठे-मीठे ताजे फल ।
मीठे रसीले आम, लीची,
संतरा, खीरा हमको भाए
बारिश की बूँदों के साथ,
मीठे-मीठे फल खाएँ ।
मीठे-मीठे ताजे फल ।
लेकिन यह हमारे वश में,
क्यों न हर-पल रहता है,
जब भी मौसम जाता है,
मीठे रस ले जाता है ।
मीठे-मीठे ताजे फल ।

राजेश्वरी, कक्षा-VI

आम

ताजे–ताजे मीठे आम,
बिक रहे हैं ढेरों आम ।
तुझे न खाऊँ आता पानी,
क्यों करूँ मैं आन-कानी ।
तेरे रस तो बड़े मजे के
शर्ट पर गिरकर हुए सजे के ।
खाए जाओ, खाओ आम
आम के आम गुठली के दाम ।
मालदह, सीपिया चखकर देखो,
बम्बईया को चट कर देखो ।
सभी फलों का राजा आम ।
लगते हैं नहीं ज्यादा दाम ।

शुभमश्री
वर्ग-8

घुमाडाला

चार कड़ियों से एक कड़ी उठाकर ऐसा रखें कि प्याला जैसा बन जाये

समर कैम्प की चक धूम-धूम

किलकारी, बिहार बाल-भवन 2016 का समर कैंप 04 जून, 2016 से लेकर 25 जून, 2016 तक चला । लेखन, नाटक, संगीत, चित्रकला इत्यादि विद्याओं में 90 गतिविधियाँ शामिल रहीं । देश के कोने-कोने से पधारे विशेषज्ञों ने बच्चों को तमाम गतिविधियों को बारीकी से सिखाया । समर कैंप का उद्घाटन 04 जून, 2015 को 'रिदम एवं सामूहिक नृत्य' से किया गया, वहीं इसका समापन 27 जून 2016 को होगा ।

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

नन्हीं कथा

मीठा फल

''अम्मा ! तू कहती रहती है न मेहनत का फल मीठा होता है । यह मेहनत कोई पेड़-वेड़ है क्या ?''

''हाँ पर इसके फल चखने के लिए इस पेड़ को बोना पड़ता है ।''

''बोना पढ़ता है...?कहाँ मिट्टी में ?''

''नहीं अपने अंदर ।''

''पर अम्मा ! वह कैसे हो सकता है?''

''यही तो जादू है ।''

''जादू ! अच्छा कैसे ?''

''बस अपने आलस्य को आसमान में उड़ा दो । फिर देखो कमाल ।''

'तब तो मैं जरूर बोऊँगा इस बीज को । पर अम्मा ! मैं इसके फल कैसे खा पाऊँगा ?''

''तू चिंता क्यूँ करता है । भले कुछ देर बाद मिले या.....। अच्छा, क्या तुम ऐसे पौधे को बोओगे ?''

''जरूर अम्मा । अच्छा अम्मा, तूने भी तो इस पौधे को बोया होगा । तेरा फल कैसा निकला ?''

बच्चे के सवाल को सुनकर माँ कुछ देर तक सोच में पड़ गई । फिर प्यार भरी निगाहों से देखते हुए, उसके बालों को हौले से सहलाते हुए बोली, ''मीठा निकला बहुत ही मीठा ।''

''तो अम्मा, मैं भी वह मीठाफल अपने दम पर जरूर पाऊँगा ।''

-अभिनंदन

बूझों तो जानें

- -एक बहादुर ऐसा वीर गाना गाए मारे तीर ।
- बिल्ली की पूँछ हाथ में
  बिल्ली रहे इलाहाबाद में
- अंत काटे तो बन जाऊँ कौआ,
  बीच काटे तो बनूँ काम,
  प्रथम काटो तो, हाथी बनूँ मैं,
  तीन अक्षर का मेरा नाम ।
  कौन हूँ मैं ?
- ऐसी चीज बताओ जो,
  मुझे बाँटा जा सकता,
  लेकिन खाया नहीं जा सकता,
  सिर्फ खेला जा सकता ।
  कौन हूँ मैं ?
- करता खेत में दिन भर काम,
- लिजलिज देह पर है उसे अभिमान,
  मुँह से करता रहता काम,
  बताओ तो जाने उसका नाम ?
- कान नहीं और नाक नहीं,
- पर सीने पर हैं दाँत-ही-दाँत,
- मुँह नहीं पर, गाए सब राग,
  सदा निकले सुरीली आवाज ।
  कौन हूँ मैं ?

शैतान हवा

माँ, ये शैतान हवा,
कहाँ से बहती है ?
कभी ठंडा, कभी गरम,
कैसे यह लगती है ?
क्या ये हवा माँ,
नानी-घर से आती है ?
या फिर दादी कहीं से,
इसे पकड़कर लाती है ।
रहती कहाँ, चलती कैसे,
कहीं दीख न पाती है ।
अपने मस्त झोंको से यह,
सब में समा ही जाती है ।
कभी देती है राहत तो,
कभी यह तड़पाती है ।
है बहुत चालाक मुसाफिर,
चुपके आती-जाती है ।

प्रवीण कुमार

कहते अंग

देखो-देखो मेरे बाल,
होती इनकी कितनी चाल ।
झट-पट करते ये कमाल,
पूछो न अब इनका हाल ।
दिमाग भी करते कई सवाल,
जैसे बुनते मकड़ी-जाल ।
हर सवाल में होते ताल,
देखो बैठ बजाते झाल ।
आँख भी कहती शान से,
दुनिया देखूँ ईमान से ।
करता न गलती जान से,
प्यार करता जहान से ।
नाक भी बोली प्यार से,
लेती हवा पेड़ों से ।
मैं तो हूँ जीवन-दान,
बचाती हूँ सब की जान ।
मुँह भी कहाँ ठहरे भाई,
न समझो अब गूंगा भाई ।
करता रहता हरदम बात,
पूछो न अब मेरी जात ।
हाथ की अब बात निराली,
बजाते रहता हरदम ताली ।
कभी न होते हाथ खाली,
उँगलियाँ करतीं आली-आली ।
अब पैर भी बोला जो से,
चलता मैं बिन शोर के ।
कर देता सफर आसान,
तू अब मुझको कर सम्मान ।

-मुनटुन राज

हद से गुजर जाना है

गाँव के किसान भाई,
दिनभर करते खेती ।
अन्न उपजाने की आस में,
बारिश की करते विनती ।
काले बादल हरदम
दूर गाँव तक जाते हैं ।
हर गाँव में बारिश होती,
हमारे गाँव नहीं आते हैं ।
बहुत सोचने के बाद,
गाँवों को आई समझ में ।
क्यों नहीं होती बारिश,
सिर्फ हमारे गाँव में ?
हमने काट डाले पेड़,
कुओं को है तो भर डाला है ।
नदी में डाला कूड़ा-कचरा,
पोखर गंदा कर डाला है ।
हमने अब ली है शपथ,
बारिश धरती पर लाना है ।
पानी बचाने के लिए,
हद से तो गुजर जाना है ।

- सौरभ कुमार
IXth

नन्हीं तुलिका

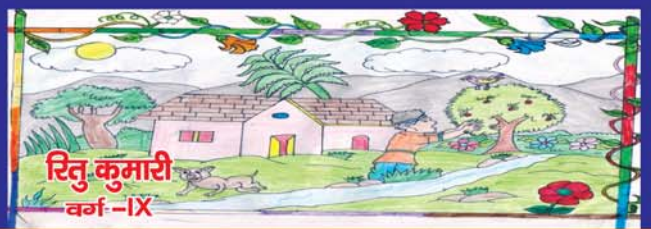

किस्सा कहानी

डरावनी बूँद

''वाह ! क्या कमाल की है मेरी ज़िन्दगी?अब तो मैं और भी ज़्यादा आज़ाद हूँ । इस आसमान की सैर लगाना, उड़ना और जहाँ मन चाहे वहाँ का रास्ता पकड़ लेना, न कोई रोक-टोक और न ही मन में कोई मायूसी । वाह, मज़ा गया । मेरे पास एक उड़नतश्तरी भी है और दो पंख भी ।'' इस गगन की अनोखी सैर पर चले फलक के मुँह से तुरंत ही निकले । आज तो जैसे वो सबुकछ सच हो गया जो कभी वह ख्वाबों में सोचा करता था । परिंदों से बातें करना, रॉकेट की तरह उड़ना, बादलों को इतने नजदीक से देखना और ठंडी चल रही मगन-मस्तानी हवाओं के साथ ही फलक का भी अपनी खुशियों की चरम सीमा पर होना । अब जब इस आकाश की सैर कर ही रहे हैं तो आखिर बादलों पर कुदक-फुदक करने का मज़ा कोई कैसे न उठाए ?

फलक के मन में भी यह बात आई थी, पर फिर उसका ये नादान दिल बड़ा ही धक ! धक ! धक ! भी तो कर रहा था । कहीं ऐसा हुआ कि वहाँ जाने से वो खुद पानी बन जाए, बादल फटकर गिर जाए या फिर वो फलक को निगल न जाए, कुछ भी हो सकता है । एक साथ ही इतने सारे डर उसके मन में अपना कब्ज़ा किये बैठे थे कि तभी जोरों से हवा का एक झोंका आया और फलक को उड़ाकर मोटे-ताज़े बिल्कुल हाथी की तरह दिखने वाले उस बादल के ऊपर ले आया । धरती पर था तो यहाँ आने का मन था, यहाँ है तो कुछ हो जाने का डर है जबकि उसके पास पंख भी थे ।''

''अरे वाह, मुझे कुछ भी नहीं हुआ, मैं बच गया । हुर्रे... । अरे, ये क्या ?ये बूँदें ?'' उछलते-कूदते उसकी हथेलियों पर अपने आप ही कुछ बूँदें आ गईं । न जाने कहाँ से आईं ?हाँ-हाँ, सारे बादल भींग चुके थे, उनमें से कई बूँदें नीचे की ओर टपक रही थीं पर एक बूँद उसकी हथेली पर भी आ बैठी थी । 'ओ... बारिश हो रही है अब तो और भी मस्ती होगी, पर ये क्या ?ये.... ये क्या... इस बूँद के तो हाथ...पैर...ना....नाक-मुँह, सब हैं । ये कैसे ?मैंने तो कभी ऐसा नहीं देखा । भागो....भागो ।'' कहता हुआ फलक तेजी से भागा और उसने उस बूँद को नीचे गिराने की कोशिश की । पर हुआ बिल्कुल ही उलटा । वह बूँद तो उसका पीछा करने लगी । उसके मन में बैठे डर ने उस बूँद को एक नाम दे दिया, 'डरावनी बूँद' ।

अब तो बारिश तेज होती जा रही थी । सारा मज़ा गायब हो गया और डर का सिलसिला शुरू । वह चिल्लाया, ''आह ! मम्मी-पापा ! बचाओ, कोई मुझे बचाओ, हे भगवान ! मेरा साथ दो । ये डरावनी बूँद तो मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रही ।'' एक तो फलक का परेशान होना और ऊपर से उस बूँद का बार-बार चिल्लाना, ''मेरी बात सुनो, मुझे तुमसे कुछ कहना है ।'' भागते-भागते रात हो चुकी थी और बारिश भी खत्म हो चुकी थी । मौसम का ठंडापन भी थोड़ा कम हुआ ।

फलक टिमटिमाते तारों से मदद माँग रहा था पर किसी के पास भी समाधान नहीं था ।'' आ...आ... । ये क्या ?'' अचानक से फलक एक सफेद गोले से टकराया, भला ये चट्टान जैसा गोला क्या है?ऊफ ! तभी एक आवाज़ आई, '' मैं तुम्हारा चंदा मामा हूँ, डरो मत ।'' ''चंदा मामा, मेरी मदद करो, उस डरावनी बूँद से मुझे बचाओ ।'' थोड़ा हिचकते हुए उसने कहा । चंदा मामा बोले, '' वह डरावनी नहीं है, वह तो बस तुमसे कुछ कहना चाहती है; सुनो तो जरा ! '' ''नहीं-नहीं, मुझे मार डालेगी आखिर ये तो धीरे-धीरे और भी ज्यादा, यहाँ तक कि मुझसे भी बड़ी होती जा रही है ।'' ''नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा, मेरा यकीन करो फलक ।''

''पहले तो फलक नहीं माना पर फिर वह राजी हो गया । उस बूँद ने कहा, ''क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगे ?'' फलक चौंक गया !'' ओ.. तो यह बात थी, पर मैं तो.बुद्धू हूँ....एकदम । छोड़ो, वैसे हाँ, मैं तो तुमसे जरूर दोस्ती करूँ । ''बूँद ने कहा, ''मुझे तुमसे एक मदद चाहिए । क्या तुम मेरी मदद करोगे?'' ''हाँ जरूर, अगर मैं कर सका ।'' ''तो सुनो, हम, हमारे बादल राजा और यह सारी प्रकृति तुम मनुष्यों से खफा हैं, क्योंकि तुम सब जल को बर्बाद कर रहे हो । हमारा अस्तित्व खत्म हो रहा है । हम सब भी पहले शुद्ध हुआ करते थे । अब गंदगी से भरे जा रहे हैं । इसीलिए तो मैं भी डरावनी होती जा रही । क्यूँकि मैं प्रदूषित हो रही हूँ । इसके कारण तुम मानव जीवित हो और इसकी तबाही भी मानवों को ही झेलनी पड़ेगी ।

प्लीज, हमें बचाओ । ताकि पानी की किल्लत किसी बहुत बड़ी जंग और बर्बादी का कारण ना बनें । प्लीज़ ।''

इतना सुनकर फलक ने फैसला कर लिया था कि वह जल ज़रूर बचाएगा और आसपास वालों को भी इस बात के लिए जरूर मनायेगा । अचानक से वह बूँद एक बादल बन गयी । उसने कहा, ''चलो, अब मैं तुम्हें इस आसमान की थोड़ी और सैर कराते हुए तुम्हारे घर छोड़ देती हूँ । मैं तुमसे मिलने आती रहूँगी । वैसे, मैं डरावनी जरूर हूँ, पर सिर्फ लोगों को उनकी ग़लतियाँ याद दिलाने के लिए, उन्हें परेशान करने के लिए नहीं । फलक बैठा और चल पड़ा अपने घर उस डरावनी बूँद के साथ इस सोच को संग लिए कि वह पानी बचाएगा; ताकि वर्तमान को ठीक किया जा सके और जब वर्तमान सही हो जाए तो भविष्य के बारे में सोचा जा सके ।

-प्रियंतरा भारती, बी.बी.बी.के.-1491

हँसी-ठहाका

● शिक्षक (बब्लू से)–ऑटो रिक्शा के कितने चक्के होते हैं ?

बब्लू–जी 6 होते हैं ।

शिक्षक– कैसे ?

बब्लू–3 ऑटो के और 3 रिक्शा के ।

● शिक्षक ने : (बब्लू से पूछा)–इस दुनिया में कितने देश हैं ?

बब्लू : एक भारत, बाकी तो विदेश हैं ।

● बब्लू : भाई साहब एक काला बल्व देना ।

दूकानदार : ऐसा कोई बल्व नहीं आता, वैसे आप काले बल्व का क्या करेंगे ?

बब्लू : दोपहर में सोने के लिए अंधेरा करना है ।

● गोपी की रिपोर्ट कार्ड देखकर पापा गुस्से में बोले–पता है जब जवाहरलाल नेहरू तुम्हारी उम्र के थे तो क्लास में मॉनीटर थे ।

- जी, पर जब वे आपकी उम्र के थे तब भारत के प्रधानमंत्री थे ।

मेरा मस्ती भरा दिन

एक प्यारी-सी लड़की थी, जिसका नाम चीची था । चीची अपने माता-पिता के साथ शहर में रहती थी । जब चीची की गर्मी छुट्टी हो गई, तब उसने सोचा–'क्यों न इस बार गर्मी की छुट्टी में गाँव चलें । घर में मम्मी-पापा गाँव जाने के लिए मान गए थे ।' कल होते ही चीची अपने माता-पिता के साथ रेलगाड़ी में बैठ गई । रेलगाड़ी में बैठे-बैठे वह सोचने लगी कि गाँव में कुछ बदला तो नहीं होगा ।

उसके दिमाग में अजीब-अजीब ख्याल आ रहे थे, कुछ देर बाद चीची अपने गाँव पहुँच गयी । वहाँ पहुँचने के बाद उसने देखा कि गाँव तो बिल्कुल ही बदल गया है । दो साल पहले बड़ी चाची का घर तो झोंपड़ी का था और अब ईंट का हो गया है । सभी के घरों में शौचालय हैं । सभी के घरों की सुख-सुविधाओं को देखकर चीची बहुत खुश हुई । तभी देखते-ही-देखते शाम हो चुकी थी । चीची की मम्मी ने उसे घर बुलाया और कहा कि बेटा मुँह हाथ-धोकर खाना खा लो और कल तुम अपने दोस्तों के साथ बगीचा घूमने चली जाना ।

जब सुबह हुई तो चीची ने सोचा–'दोस्तों को परेशान करने से क्या फायदा ! मैं अकेले ही चली जाती हूँ ।' जब वह बगीचे में गई तो वह बहुत खुश हुई, क्योंकि वहाँ आम, लीची, जामुन इत्यादि के पेड़ थे । सभी प्रकार के फलों को देखकर चीची के मुँह में पानी आ गया, क्योंकि चीची को मीठे फल बहुत ही ज्यादा पसंद थे । चीची दौड़कर आम के पेड़ पर चढ़ने की कोशिश करने लगी, लेकिन चढ़ न सकी; क्योंकि उसे पेड़ पर चढ़ना आता ही नहीं था । उसने सोचा–'अगर स्कूल में चढ़ना सिखाया गया होता तो आज मैं पेड़ पर चढ़ गई होती । तभी चीची का दोस्त उधर से गुजर रहा था । चीची ने जोर-जोर से आवाज लगाई, ''मीकू... मीकू... जल्दी इधर आ ।'' मीकू दौड़ता हुआ चीची के पास गया और पूछा, ''तुम इतने जोर से क्यों आवाज लगा रही थी?''चीची ने मीकू को बताया कि उसे पेड़ पर चढ़ना नहीं आता है । जिसकी वजह से वह कोई भी फल खा नहीं पा रही है । तभी मीकू ने पेड़ पर चढ़ना शुरू किया और आम, लीची, जामुन इत्यादि सभी मीठे फल तोड़ डाले और नीचे चीची अपने बैग में सारे फल रख रही थी । उसका बैग पूरा भर गया था ।

मीकू नीचे उतरते ही चीची से बैग छीनने लगा और कहने लगा कि सारे फल मैं खाऊँगी, लेकिन चीची उसे अपना बैग दे ही नहीं रही थी । दोनों में थोड़ी बहस भी हो गई, लेकिन बाद में उन दोनों ने आधा-आधा बाँटने का फैसला किया । फिर दोनों घर की ओर चल पड़े । घर आकर चीची ने अपने सभी दोस्तो के साथ बैठकर मीठे फलों का मजा उठाया । तब चीची को पता चला कि मिल-बाँटकर खाने का मजा ही कुछ और होता है । तो दोस्तो ! आज के बाद हम सब भी मिल बाँटकर खाया करेंगे ।

– पूजा कुमारी

इस अंक के प्रतिभागी–
सौरव, नीलाभ, युवराज, पूजा, सुभांगी, राजेश्वरी, शुभमश्री, आयुष, शैली, उर्वशी, मनीषा, सोनू
बाल सम्पादक-मुनटुन, घुँघरू, प्रियंतरा, अभिनंदन, सम्राट, प्रवीण, राहुल, तुलसी
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
संयोजक– सुधीर कुमार
कार्यकारी सम्पादक–राजीव रंजन श्रीवास्तव
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब :-
पहेली : मच्छर, पतंग, कागज, ताश के पत्ते, केंचुआ, हारमोनियम,

घुमाडाला

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

बूँद-बूँद बचाना है

भरा था लबालब पानी,
अब क्यों सुखाड़ है ?
सूख रही नदियाँ और,
सूखा तालाब है ।
जल की बर्बादी,
न कोई ख्याल है ।
कैसे लिखूँ हाल इसका,
देश तो बेहाल है ।
एक बूँद पानी-लिए,
सभी तरस जायेंगे ।
प्रलय होगा अब आगे,
तब हम पछतायेंगे ।
हम सभी को आपस में,
समझना-समझाना है ।
बूँद-बूँद पानी को,
मिलकर बचाना है ।

- विष्णु कुमार
वर्ग-IXth

जीवन में आए खुशहाली

हरियाली हो गई आधी,
न करें पानी की बर्बादी ।
इस धरती पर अब तो,
सिर्फ बढ़ रही आबादी ।
धीरे-धीरे सूखती धरती,
जीव-जन्तु होते परेशान ।
मनुष्य तो समझकर भी,
क्यों बन रहा है अंजान ।
शुरू करें ऐसा अभियान,
बचाएँ पानी, खेत-खलिहान ।
चारों तरफ होगी हरियाली;
जीवन में आए खुशहाली ।

- नीलाभ मिश्रा

सूखी नदी

'' कहाँ चली गई वह पुरानी नदी । आज मैं बहुत सालों बाद गाँव आया हूँ और खोजता इधर-उधर जा रहा हूँ । शायद मैं रास्ता भूल चुका हूँ । मुझे अभी भी याद है–जब मैं दोस्तों के साथ मन बहलाने आता था । अब दोपहर में था भी वहीं कि रास्ता पूछ सकूँ । धीरे-धीरे मैं अपने गाँव के पास पहुँच चुका था । तभी एक आदमी पेड़ की छाँव में सोया दिखा ?मैं उसके पास गया और पूछा, ''अरे चाचा, वह नदी कहाँ है?पूरा गाँव देखा, कहीं नहीं मिली ?''

''अरे बेटा, लगता है बहुत सालों बाद आए हो । वह नदी तो दो साल पहले ही सूख गई-उस भयानक अकाल में । वह नदी है कहाँ ?वह तो गाँव के पूरब में है आम के बगीचे से थोड़ी दूरी पर ।''

यही सोचते हुए कि वह हमारी मस्ती का समय आज के बच्चों ने खो दिया है । उस समय हमारा पूरा दिन मस्ती भरा हुआ करता है और अब तो...क्या पता और यही सोचते-सोचते वहाँ पहुँच चुका था । मैंने यह देखा कि नदी अपनी राह पर चली जा रही है कभी इधर तो कभी उधर घूमते हुए पर इसमें पानी नहीं था । मुझे बहुत अफसोस हो रहा है कि अब तो वह समय है ही नहीं आज और आगे की पीढ़ी शायद ही किसी चमत्कार के कारण वह समय वापस ला पाए ।

-युवराज सिंह

पतंग की तरह उड़ सकती है रे फिश ।

खोजबीन

मछलियों की दुनिया निराली है । कोई विशालकाय है तो कोई बेहद छोटी और खूबसूरत । कोई पानी की गहराई में रहती है तो कोई समुद्र की ऊपर सतह में । कोई समुद्र में लंबी दूरी तक लगातार तैर सकती है तो कोई हवा में उड़ान भर सकती है । विविधताओं से भरी इन्हीं मछलियों में शामिल है रे फिश, जो चिड़िया और पतंग की तरह दिखती भी है और उन्हीं की तरह हवा में उड़ान भी भर सकती है । समुद्री जीव रे को बटॉयड भी कहा जाता है । इसे मछली की श्रेणी में रखा गया है । यह मछली दिखने में किसी पतंग की तरह होती है । पतंग की तरह ही इसका शरीर लगभग चौकोर होता है और एक कोना आगे की ओर होता है तो दूसरे कोने पर इसकी पतंग की पूँछ के जैसी लंबी पूँछ होती है । यह पानी के ऊपर भी आ सकती है और कुछ दूरी के लिए उड़ान भी भर सकती है । इस दौरान यह अपने पंखों को किसी बड़े पक्षी की तरह चलाती है । इसकी लगभग प्रजातियाँ होती हैं, जिनमें सबसे लोकप्रिय है स्टिंग रे, क्अेटस् रे, इलेक्ट्रिस रे, ईगल रे, मान्टा रे, कैहुला रे, बटरफ्लाई रे मोबुना रे आदि । यह समुद्र में झुंड में रहती है और इसके ग्रुप को स्कूल कहते हैं । इसके ग्रुप में 50 तक रे मछलियाँ हो सकती हैं । इलेक्ट्रिस रे मछली की कुल मिलाकर 69 प्रजातियाँ होती हैं, जिनमें 6 से लेकर 220 वोल्ट तक करेंट होता है । यह मछली समुद्र की ऊपरी परत से लेकर एक हजार मीटर की गहराई तक में पाई जाती है । समुद्र की ऊपरी सतह पर रहनेवाली रे मछली को इंसानों के साथ खेलने में भी मजा आता है । मछली की लंबाई लगभग 30 फीट तक होती है । वैसे नन्हीं रे मछली 1.6 फीट लंबी होती है । इसकी आयु काफी कम होती है । यह 6 साल तक ही जीवित रह पाती है । चार साल तो इसे बड़ी होने में ही लग जाते हैं । यह न्यूजीलैंड से लेकर अमेरिका और मालद्वीप तक के समुद्रों में पायी जाती है । मजेदार बात यह है कि मालद्वीप समेत कई जगहों पर तो यह पर्यटकों के साथ खेलती भी है ।

शुभांगी मिश्रा

कोंपल-हाइकु

(1) फल का मजा,
बहुत ही भाता है
यह सच है

(2) सूखी नदियाँ,
न हो ऐसा भाइयों
लेते संकल्प ।

(3) पढ़ो कहानी,
नई और पुरानी,
मिलेगी शिक्षा ।

- राहुल कुमार

खेलें खेल कोना-कोनी

कोना-कोनी खेल में कुल पाँच बच्चे होते हैं, इसमें चार कोने होते हैं, और सभी बच्चे एक-एक कोना चुन लेते हैं । फिर एक बच्चा बच जाता है, वह चोर बनता है, बाकी के चार बच्चे एक कोने से दूसरे कोने में जाते हैं और जो बच्चा कोने में खड़ा नहीं रहेगा तो उसे अगर चोर छू देता है, तो वह चोर हो जाता है और जो पहले चोर रहता है, वह एक कोने में जाकर खड़ा हो जाता है । इसी तरह खेल चलते रहता है । चलो खेलते हैं बहुत मजा आयेगा ।

कुछ नया करें

आओ पेगुवीन बनाये

दोस्तो आज हम टिशू पेपर से पेगुविन बनाना सीखेंगे ।

सामग्री–टिशू पेपर, बोतल, ब्रुश, गोंद, पानी, कलर ।

बनाने की विधि–सबसे पहले टिशू पेपर को छोटे-छोटे पीस करके उसे गोंद और पानी में मिला देते हैं । उसे अच्छी तरह से भिंगोकर कर रखें । पानी वाली खाली बोतल लें । उसके ऊपर टिशू पेपर को गोल गोलकर चिपका दे । सूखने के लिए धूप में छोड़ें । सूखने के बाद उसपर सफेद और काले रंग से रंग दें । बोतल का नीचे वाला भाग काट दें और ऊपर वाले भाग पर पेंगुवीन का सिर और चोंच बनाएँ । तो देखो बन गया ना पेंगुविन ।

झरोखा

बाल केन्द्र में सीखते बच्चे

योगा करते हुए बच्चे

कराटे विजेता बच्चे

रद्दी कागजों से कोलॉज बनाते बच्चे